25 नवम्बर, 2019 को नई दिल्ली में आयोजित होने वाले 10वें Commonwealth Youth Parliament (राष्ट्रमंडल युवा संसद), 2019

सबसे पहले, मैं राष्ट्रमंडल समूह के विभिन्न देशों से आए युवा प्रतिभागियों का भारत में स्वागत करता हूँ। मैं भारत की संसद और यहाँ की 130 करोड़ जनता की तरफ़ से आप सभी का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

साथियो, कॉमनवेल्थ यूथ पार्लियामेंट (CYP) राष्ट्रमंडल समूह के रचनात्मक चिंतन और दूरदृष्टि का जीता-जागता साकार रूप है।

CYP एक महान और पवित्र परियोजना का हिस्सा है। वह परियोजना क्या है? वह परियोजना है मानव सभ्यता के सुनहरे भविष्य को सच करने की परियोजना । लंबे संघर्षों और असंख्य बलिदानों के रास्ते पर चलकर आज हम यहाँ तक पहुँचे हैं, और लोकतंत्र के सपने को जी रहे हैं।

लेकिन लोकतंत्र को पा लेना ही काफ़ी नहीं है । लोकतंत्र को पाने के बाद यह और भी ज़रूरी है कि लोकतंत्र को बचाए रखा जाए, उसे बेहतर से बेहतर बनाया जाए। यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है । और, इसके लिए सतत जागरुक रहकर संघर्ष करते रहना पड़ता है । इसलिए हर पीढ़ी को लोकतंत्र के योद्धाओं की ज़रूरत होती है । ऐसे में हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम नई पीढ़ी को आने वाले समय में लोकतांत्रिक राजनीति के लिए श्रेष्ठ तरीक़े से तैयार करें । भविष्य की इसी ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रमंडल समूह ने CYP की परिकल्पना की है।

साथियो, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस नये युग में पूरी दुनिया एक दुसरे के अत्यंत निकट आ चुकी है। पूरा विश्व एक ग्लोबल विलेज बन चुका है। इस परिस्थिति में विश्व के हर देश की प्रगति और समृद्धि के साथ साथ सबका भविष्य भी एक दुसरे से जुड़ चुका है।

इसलिए न केवल देश के भीतर बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकतान्त्रिक प्रणाली और लोकतान्त्रिक मूल्य को अधिक से अधिक बढ़ावा देकर सशक्त बनाने की जरुरत है। इसके लिए विश्व की नई पीढ़ी में भी लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूकता और विश्वास पैदा करना होगा। उन्हें लोकतंत्र की संस्थाओं, प्रक्रियाओं और पद्धतियों से अवगत करना होगा। इस पुनीत और पावन उद्देश्य में CYP एक रचनात्मक और सक्रिय मंच की भूमिका निभा रहा है।

साथियो, जीवन के किसी भी क्षेत्र में कुछ बेहतर करने के लिए यह ज़रूरी है कि हम उस क्षेत्र की परम्पराओं से, तौर-तरीक़ों से परिचित हों। हम उसकी बारीकियों, ख़ूबियों और कमियों को जानें। CYP का भी यही प्रयास है कि आप युवाओं को संसदीय कार्य-प्रणाली से साक्षात् रूप से जोड़ा जाए ।

आप सबका इस गौरवपूर्ण आयोजन में शामिल होना इस बात की गवाही देता है कि आप संसदीय लोकतंत्र और राजनीति में रुचि रखते हैं। इसलिए आपको इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए और अपने ज्ञान व अनुभव को समृद्ध करने की कोशिश करनी चाहिए।

साथियो, आप सबको यह समझना चाहिए कि संसदीय लोकतंत्र की मूल भावना क्या है, इसकी प्रेरक-शक्ति क्या है? इसकी मूल भावना है संवाद की, वाद-विवाद की और विचार-विमर्श की, सामूहिक inclusive तरीक़े से सोचने-विचारने की। लोकतंत्र शासन की एक प्रणाली है। लेकिन उससे भी पहले लोकतंत्र निर्णय प्रक्रिया (Decision-making) का एक समावेशी तरीक़ा है।

लोकतंत्र वस्तुत: बहुमत का अल्पमत के ऊपर शासन नहीं है। बल्कि इसकी ख़ासियत यह है कि इसमें सभी वर्गों (stakeholders) को अपनी बात कहने का अधिकार होता है। सभी की बात सुनी जाती है और उनके दृष्टिकोण (view-point) को निर्णय प्रक्रिया (decision-making) में जगह दी जाती है।

लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि लोकतंत्र में असहमति का भी अधिकार होता है। इसलिए हमें विरोधी विचारों और असहमतियों को भी धैर्य से सुनना चाहिए और उन्हें सम्मान देना चाहिए। इसी भावना (spirit) और इन्हीं मूल्यों पर संसदीय लोकतंत्र की सफलता टिकी होती है। इसलिए आप सभी को ये सारी बातें सीखनी चाहिए।

आज पूरा विश्व कई तरह की समस्याओं और चुनौतियों से जूझ रहा है। एक तरफ़ जलवायु परिवर्तन का ख़तरा मँडरा रहा है, तो दूसरी ओर विश्व के कई हिस्सों में गम्भीर राजनीतिक संकट मौजूद है। शरणार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही है। विश्व-व्यापार भी कई परेशानियों से गुज़र रहा है।

इंटरनेट (Internet) और सूचना एवं संचार तकनीक ICT (Information and Communication Technology) के कारण एक तरफ तो कई सकारात्मक परिवर्तन आये हैं वही दूसरी तरफ नई तरह की समस्याएँ पैदा हो रही हैं। और ये सारी समस्याएं ऐसी हैं जो पूरे विश्व के लिए मायने रखती हैं।

इनसे निपटने के लिए पूरे विश्व को संवाद (Dialogue), वाद-विवाद (Debate) और चर्चा (Discussion) के ज़रिए कॉमन एजेंडा (Common Agenda) बनाकर काम करना होगा। यह 3-D ही दरअसल संसदीय लोकतंत्र के मूल भाव हैं। Dialogue, Debate और Discussion के जरिए ही हम चौथे-D यानी Decision पर पहुंचते हैं।

साथियो, यहाँ पर पूछा जा सकता है कि इस परिदृश्य में युवाओं की क्या भूमिका हो सकती है ? मेरा मानना है कि युवाओं को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में और निर्णय प्रक्रिया में प्रत्यक्ष रूप से शामिल किया जाना चाहिए। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि युवाओं में अपार ऊर्जा, उमंग और उत्साह होता है। उनके भीतर रचनात्मक तरीक़े से सोचने की अतुलनीय क्षमता होती है।

एक युवा हर प्रश्न, हर समस्या, हर मुद्दे पर खुले दिमाग़ से, नए ढंग से सोच-विचार सकता है और नए समाधान (creative solutions) दे सकता है। इसलिए हर देश को अपनी सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक प्रक्रियाओं और निर्णय प्रक्रिया में अपने युवाओं को शामिल करना चाहिए। लेकिन इन सबके लिए यह भी ज़रूरी है कि युवाओं को सही शिक्षण और प्रशिक्षण दिया जाए। उन्हें हर मुद्दे पर नए (creative) ढंग से सोचना सिखाया जाए।

साथियो, आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी के कारण दुनिया के सभी देशों की नियति, उनका भविष्य एक साथ जुड़ गया है। इसलिए, अपने साझे भविष्य को बेहतर बनाने के लिए हमें साझी रणनीति (strategy) के साथ साझे ढंग से काम करना होगा।

मेरा विश्वास है कि संसदीय लोकतंत्र की भावना (Spirit) इसमें हमारा मार्गदर्शन कर सकती है। इसलिए हमें CYP जैसे कार्यक्रमों की सख़्त ज़रूरत है।

मैं आशा करता हूँ कि इस आयोजन के ज़रिए आप सभी प्रतिभागी यह समझ पाएँगे कि लोकतंत्र के भीतर शासन और प्रशासन में संसद की क्या भूमिका होती है और संसद कैसे इस भूमिका का निर्वाह करती है? एक सांसद की क्या जिम्मेदारियों और दायित्व होते हैं?

मुझे उम्मीद है कि आप लोग एक दूसरे से अपने अनुभवों को साझा करके एक दूसरे को समृद्ध करेंगे। मेरी कामना है कि यह आयोजन आपको भविष्य में बेहतर नेतृत्व के लिए जरूरी कौशल और सोच (thought process) विकसित करने में सहायता करेगा। और आप इसका उपयोग करके अपने-अपने देशों और पूरे विश्व को बेहतर बनाएंगे।

मैं राष्ट्रमंडल संसदीय संघ, भारत क्षेत्र की सीपीए दिल्ली शाखा के सभी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूं और मैं 10वीं राष्ट्रमंडल युवा संसद की मेजबानी करने के लिए दिल्ली विधान सभा को बधाई देता हूं। मुझे विश्वास है कि आपके विचार-विमर्श फलदायी होंगे। मैं इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के सभी प्रतिभागियों को पुनः अपनी शुभकामनाएं देता हूं।